जनवरी 2019 | मूल्य :20/-

डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2018-2020

पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

संस्कार सागर

वर्ष :20 | अंक : 237

संस्कार सागर पढ़िये * संस्कार गढ़िये * संस्कार सागर के सदस्य बनिए

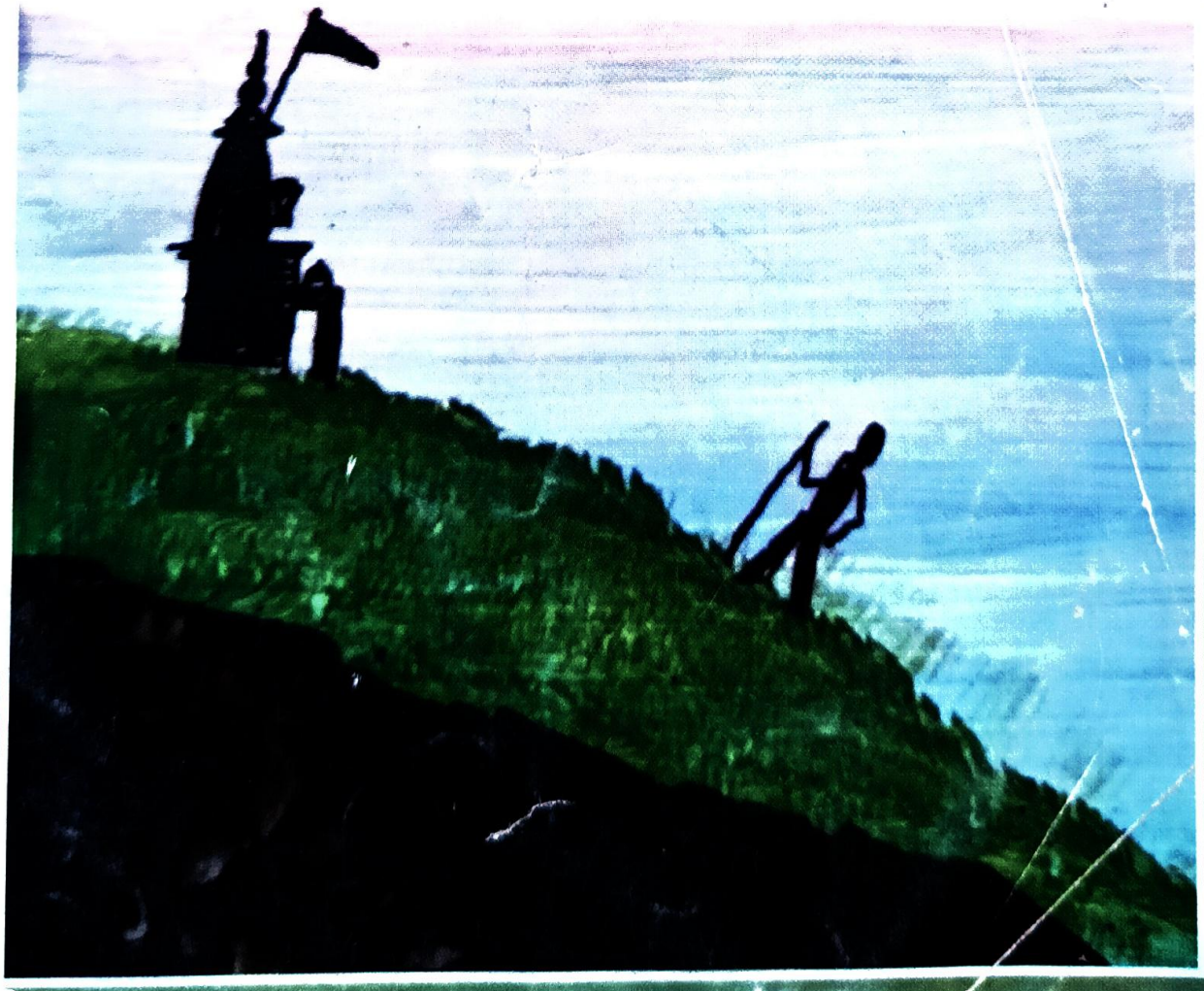

नवागढ़ (नंदपुर) की पुरा सम्पदा और मांगलिक प्रतीक

❊ ब्र. जयकुमार जैन निशांत (टीकमगढ़) ❊

भारत विभिन्न संस्कृतियों से मंडित ऐसा दोष है, जहां करोड़ों वर्ष प्राचीन साक्ष्य उपलब्ध हैं। इसके विभिन्न प्रदेशों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पौराणिक धरोहर संरक्षित हैं। उन्हीं में से भारत हृदय बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिकता भी अतिप्राचीन है। इसके नामकरण के संबंध में अनेक मान्यतायें एवं कथानक हैं। इसके चित्रकूट (रामायण), दशार्ण (महाभाष्य, मार्कण्डेय, पुराण, मेघदूत), चेदि (महाभारत) गोल्लदेश (कुवलयमाला), चि-चि-टो (चीनी यात्री ह्वेनसांग), युद्धदेश (विष्णु धर्मोत्तर पुराण) जीजाक भक्ति (इनसाइक्लोपीड़िया ब्रिटानिका) जुझौति (स्कंधपुराण), गौंडवाना, कर्णावती, डाहल, वज्रदेष, मध्यदेश, चन्द्रावती, विन्ध्येलखण्ड, पिप्पलादि, पद्मावती, गोलापुर, बुन्देलखण्ड (छत्र प्रकाश एवं वीरसिंह देव चरित्र) आदि नाम प्राचीनकाल से आज तक रखे गये। बुंदेलखंण्ड के झांसी संभाग के जिला ललितपुर में देवगढ़, बालावेहट, चांदपुर, दुधही, सेरोन, मदनपुर, कारीटोरन, गिरार, नवागढ़ (नंदपुर), सड़कौरा, अंजनी, बानपुर, सीरोन, जहाजपुर, दैलवाड़ा आदि अनेक तीर्थ एवं प्रागैतिहासिक नगर विद्यमान हैं। जिनमें नवागढ़ क्षेत्र की पुरासम्पदा एक विशिष्टकाल की संस्कृति को अभिव्यक्त करती है।

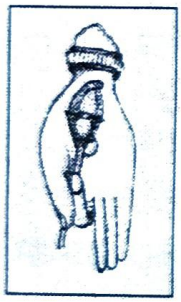

नवागढ़ (नंदपुर) में प्राप्त प्रतिमायें एवं शिल्प गुप्तकाल, प्रतिहारकाल तथा प्रारंभिक चंदेलकाल के हैं जिनमें इनकी प्राचीनता जहां पांचवी सदी सिद्ध होती है, वहीं पुरापाषाण कालीन औजार (2 से 5 लाख वर्ष पूर्व), कप मार्क (10 हजार वर्ष), शैलचित्र (5 से 8 हजार वर्ष), तीर्थंकर रॉककट इमेज (2 हजार वर्ष) से इसकी प्राचीनता स्वमेव सिद्ध हो रही है। नवागढ़ (नंदपुर) ग्राम नाबई रमणीक, शांत, हरियाली युक्त पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य 24 से 35 अक्षांश एवं 78 से देशांश पर कलरा नाला, पनरा नाला, हर्रई नाला के मध्य स्थित है। यहाँ अतिशयकारी तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव त्रिपदधारी अरनाथ स्वामी का जैन तीर्थ, आचार्य गुफा, उपाध्याय गुफा, साधु गुफा, दूल्हादेव, देवासर, बगाजटोरिया (पहाड़ी) फाईटेन टोरिया, सिद्धों की टोरिया, बगाजमाता, हनुमान मंदिर, बावड़ी टीले प्रसिद्ध हैं।

1. आचार्य कुन्द कुन्द स्वामी ने दंसणपाहुड में तीर्थंकर के शरीर पर पाये जाने वाले एक हजार आठ शुभलक्षणों का उल्लेख किया है।

विरहदि जाव जिणिंदो सहसट्ठ सुलक्खणेहिं संजुत्तो।
चउतीस अइसयजुदो सा पडिया थावरा भणिया।।35।।

एक हजार आठ शुभ लक्षणों से युक्त तथा चौंतीस अतिशयों से सहित तीर्थंकर भगवान तब तक यहां विहार करते हैं, तब तक उनको स्थावर प्रतिमा कहा गया है।

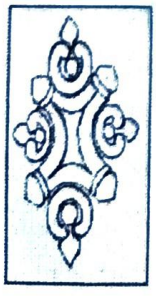

तीर्थंकर के शरीर में पाये जाने वाले एक हजार आठ शुभलक्षण कौन-कौन से हैं प्रकट करते हैं- श्रीवत्स, हाथ और पैरों में शंख, कमल, स्वस्तिक, अंकुश, तोरण, चंवर, सफेद छत्र , सिंहासन, ध्वज, दो मच्छ, दो कलश, कछुवा, चक्र, मेरु, इन्द्र पर्वत, नंदी पुर, गोपुर, चन्द्र, सूर्य, उत्तम घोड़ा , व्यंजन बांसुरी, वीणा, मृदंग दो पुष्पमाला, रेशमीवस्त्र, बाजार, कुण्डल आदि सोलह आभूषण, फलों से

युक्त उपवन, अच्छी तरह से पका हुआ धान का खेत, रत्नद्वीप वज्र, पृथ्वी, लक्ष्मी, सरस्वती, कामधेनु, बैल, चूड़ामणि, महानिधि, कल्पबेल, सुवर्ण, जम्बूवृक्ष, गरुण, नक्षत्र, तारका, राजभवन, गृह, सिद्धार्थवृक्ष, अष्टप्रातिहार्य, अष्टमंगल द्रव्य इन्हें आदि से लेकर एक सौ आठ लक्षण होते हैं और तिल मस्सा आदि नौ सौ व्यंजन होते हैं। यह सब मिलकर 1008 शुभ लक्षण कहलाते हैं।

2. अष्ट प्रतिहार्य- अशोक वृक्ष, सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, दिव्यचमर, सिंहासन, भामंडल दुंदुभि एवं छत्रत्रय।

3. अष्टमंगल द्रव्य- सुवर्णमय झारी, तालपत्र, सुवर्णकलश, पताका, सुप्रतिष्ठ (ठौना), सफेद छत्र, दर्पण और चमर।

4. आचार्य जयसेन स्वामी ने प्रतिष्ठापाठ में माता के सोलह मांगलिक स्वप्नों का वर्णन किया है। बैल, ऐरावत, सिंह स्वर्णकलश, अभिसिक्त लक्ष्मी, युगत पुष्पमाल, चन्द्रमा, सूर्य, युगलकलश, कमलयुक्त सरोवर, समुद्र, सिंहासन, स्वर्ग विमान, धरणेन्द्र भवन, रत्नराशि, निर्धूम अग्नि।

5. धवला पुस्तक प्रथम की टीका में आचार्य वीरसेन स्वामी ने मांगलिक द्रव्यों का वर्णन किया है।

सिद्धत्थ-पुण्ण कुंभो वंदनमाला य मंगल छत्तं।
सेदो वण्णो आदंसणे य कण्णा य जच्चसो ॥3॥

सिद्धार्थ (श्वेत सरसों) जल से भरा कलश, वंदनमाला, छत्र, श्वेतवर्ण दपर्ण आदि अचित्त मंगल हैं। बालकन्या तथा उत्तम जाति का घोड़ा सचित्त मंगल है तथा अलंकार सहित कन्या मिश्र मंगल है। इसके साथ जिनबिम्ब, जिनयति, जिनेन्द्र देव, जिनयति प्रतिमा, शास्त्र, पंचकल्याणक क्षेत्र, अष्टान्हिका पर्व को भी मंगल कहा जाता है।

6. प्रतिष्ठा पाठ में छत्र, रत्नदर्पण, ध्वजा, वस्त्र एवं मांगलिक आभूषणों का वर्णन मिलता है॥3॥

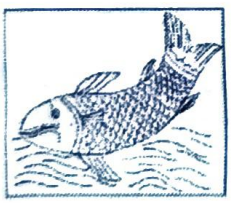

अभी तक प्राप्त अवशेषों में मांगलिक प्रतीकों में मुख्यतः खारबेल के शिलालेख में स्वस्तिक, मोहन जोदड़ो की सील में वृषभ, पुष्प चंदेरी की प्राचीन अभिलेख (ईसापूर्व द्वितीय सदी) नंदीपद (नंद्यावर्त) स्वस्तिक, विहग, मीन, मिथुन, पद्म, शंख, त्रिरत्न, वज्र, ध्वज, तालवृत (व्यंजन), दर्पण भद्रासन जाव पडिरूवा आदि।

तीर्थंकरों के चिन्ह, श्रीवत्स, छत्र, चमर, भामण्डल, चक्र, वृक्ष, गंगा, यमुना देवी, मकरतोरण आदि प्राचीनकालीन शिल्पों में, प्रायः सभी मूर्तियों में प्राप्त होते हैं। मथुरा में प्राक् कुषाण एवं कुषाण काल के आयागपट्टों में भी मांगलिक प्रतीक प्राप्त हुये हैं। प्राचीनतम् शैलचित्रों में वृषभ, हिरण, चक्र, सरोवर, पहाड़ वसतिका, सूर्य, केवलज्ञान (लोकपूरण चक्रिका) चक्षु पंचमगति प्रतीक, सप्तपंखुडी पुष्प आदि का अंकन यहां की पुरातात्विक ऐतिहासिका को दर्शाते हैं । इन मांगलिक प्रतीकों की जैन धर्म के मांगलिक प्रतीकों से अत्यधिक साम्यता मिलती है।

फाईटन पहाड़ी पर स्थित गुफा में पाषाण शिला पर उत्कीर्ण चरणयुगल तथा उत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा (रॉककट इमेज) इन शैलाश्रयों को जैन श्रमणें की साधना एवं जैन तीर्थ के निर्माण की हजारों वर्ष प्राचीन प्रारंभिक भूमिका का संकेत करते हैं। इनसे सिद्ध होता है यहां जैन संस्कृति का क्रमिक विकास एवं संरक्षण होता रहा है। यह प्रसिद्ध साधना स्थल रहा है।

संग्रहीत पुरा संपदा में तीर्थंकरों के बिम्बों में भी मांगलिक प्रतीक उपलब्ध है। आदिनाथ- वृषभ संवत् (1123), अजितनाथ-हस्ती, संभवनाथ-घोड़ा, सुमतिनाथ- विहग, पद्मप्रभ-कमल, चन्द्रप्रभ-चन्द्रमा, शीतलनाथ-वृक्ष धर्मनाथ-वज्रदण्ड, शांतिनाथ-हिरण (1202) अरनाथ-मीन, मल्लिनाथ-कलश, नेमिनाथ-शंख, पार्श्वनाथ-सर्प (1568), महावीर सिंह (1195), साधु परमेष्ठी-पिच्छी आदि। फाईटेन पहाड़ी की एक गुफा से उपाध्याय परमेष्ठी का संवत् 1188 (1131ई.) की मांगलिक प्रतिमा तथा पहाड़ी के आसपास कमल कलिका युक्त कलात्मक सुन्दर हाथ एवं अन्य शिल्पों के साथ विशाल प्रतिमाओं की प्राप्ति यहां विशाल जैन मंदिरों का संकेत करते हैं। डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी वाराणसी के अनुसार चारों मानस्तंभों से सिद्ध होता है कि यहां चार मंदिर और रहे होंगे।

पाषाण पट्ट पर णमोकार मंत्र का अंकन विशेष मांगलिक प्रतीक है।

विभिन्न शिल्पों में मांगलिक प्रतीक- मानस्तंभ संवत् 1203 पर जंजीर युक्त घंटिका एवं उपाध्याय बिम्ब, गंगायमुना देवी, कलश युगल, अकलंक-निकलंक बिम्ब में शास्त्र एवं लेखनी, अलंकृत शिखर, त्रिछत्र एवं गजयुगल, परमेष्ठी बिम्ब में कमण्डलु-पिच्छी, मंदिर छत वितान (आयागपट्ट) में कीर्तिमुख, अंबिका देवी, आम्रवृक्ष, फल एवं अरिहंत बिम्ब, इन्द्राणी के हाथ में चंवर उड़ते हुए यक्ष का पुष्पहार, महिचंद्र श्रेष्ठी के हाथ में पुष्पमाला एवं अरिहंत बिम्ब में अष्ट प्रातिहार्य विशेष मांगलिक प्रतीक हैं।

इस प्रकार नवागढ़ (नंदपुर) में संग्रहीत पुरावशेषों में प्राप्त मांगलिक प्रतीकों से सिद्ध होता है कि यहां विशेषरूप से जैन संस्कृति का क्रमिक विकास हुआ है। यह श्रमण संस्कृति एवं विद्याध्ययन, गुरुकुल का विशाल तीर्थ रहा है, जहां साधकों ने आकर साधना के साथ-साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक धरोहर का संवर्धन किया है।

जैन तीर्थक्षेत्र से तीन कि.मी. पश्चिम में फाईटोन (फाइव स्टोन) पहाड़ी पर स्थित शेलाश्रय एवं गुफाओं से प्राप्त पुरा सम्पदा, दक्षिण में एक किमी. दूर बगाजटोरिया में स्थित श्रेष्ठी महिचंद फलक पर मांगलिक अरिहंत बिम्ब, उपाध्याय गुफा से प्राप्त अम्बिका देवी के शीर्ष पर अरिहंत बिम्ब, चमरधारिणी इन्द्राणी, पूर्व दिशा में एक किमी. दूर चंदेल बावडी के पास मंदिर अवशेषों में अमलसार तथा उत्तर दिशा में आधा किमी. दूर टीले से प्राप्त आक्रांतहस्ती युक्त सिंह एवं अमलसार इस क्षेत्र की विशालता को कई किमी. में होने के संकेत करते हैं। मिट्टी एवं पाषाण के मन के यहाँ विशाल नगर एवं उसमें मानव सभ्यता का संकेत करते हैं जिनका अन्वेशण करने से न जाने कितने रहस्यों एवं तथ्यों का उद्घाटित होना शेष है।

अरनाथ मूलनायक जिन प्रतिमा में श्रीवत्स, चंवर, मीन, पार्श्वनाथ बिम्ब में माल्याधर एवं मृदंग, शांतिनाथ बिम्ब में युगलहिरण, आदि तीर्थंकर बिम्ब में मांगलिक प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त स्वतंत्र प्रतीक भी नवागढ़ संग्रहालय में संग्रहीत हैं- शिखर कलश, अमलसार, चक्र, त्रिछत्र सकलश गलयुगल, माल्याधर, मंदिर, शिखर आदि। पचास से अधिक खण्डित तीर्थंकर बिम्बों में चमर छत्र भामंडल अशोक वृक्ष मृदंग, श्रीवत्स, माल्याधर, गजयुगल, मंगलकलश, मांगलिक प्रतीक रूप में उपलब्ध हैं। जिनशासन में मांगलिक प्रतीक सुखसमृद्धि धर्माचरण का संकेत करते हैं।